The material given below is concerned with the UG student of VKSU (Maharaja College, Ara)

BA (Part I) General Psychology

Paper I

Q. Discuss the objective observation method. Describe the merits and demerits of the objective observation method.

मनोविज्ञान की यह दूसरी प्रमुख विधि है इस विधि द्वारा व्यक्ति के व्यवहारों का वास्तविक अध्ययन किया जाता है इस विधि के द्वारा किसी व्यक्ति के वस्तुपरक (objective) निरीक्षण किया जाता है एवं निरीक्षण से प्राप्त परिणाम का विश्लेषण कर निष्कर्ष पर पहुँचा जाता है इस विधि में प्रयोज्य के व्यवहारों का निरीक्षण कोई दूसरा व्यक्ति करता है इस विधि के द्वारा प्रयोज्य की क्रियाओं अर्थात वह जो कुछ भी प्रगट रूप से करता है उसका निरीक्षण किया जाता है व्यक्ति के व्यवहार दो प्रकार के होते हैं।

(1) आन्तरिक व्यवहार (Internal behaviour)

(2) बाह्य व्यवहार (External behaviour)

आन्तरिक व्यवहार व्यक्ति के वैसे व्यवहार आते हैं जिनका निरीक्षण खुली नजरों से नहीं किया जा सकता है वे व्यवहार व्यक्ति के अन्दर होते हैं। उसे किसी विशिष्ट प्रकार के यंत्रों द्वारा मापा जा सकता है।

जैसे हृदय की गति को स्टेथोस्कोप (Stethoscope) से रक्तचाप को स्फिग्मोमेनोमीटर (Sphygmomanometer), मस्तिष्कीय प्रवाहों को इलेक्ट्रोइनसाइफैलोग्राम (electroencyphalogram or EEG) से मापकर इनकी क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है।

बाह्य व्यवहार (External behaviour) — बाह्य व्यवहार व्यक्ति के शरीर के बाहर होता है जिसका निरीक्षण खुली आँखों से किया जा सकता है। जैसे व्यक्ति के चेहरे में परिवर्तन (changes in facial expression), शारीरिक स्थिति में परिवर्तन (changes in body posture) इत्यादि। ~~इसके कई प्रकार होते~~ बाह्य निरीक्षण के कई प्रकार होते हैं।
(i) स्वभाविक निरीक्षण (ii) नियंत्रित निरीक्षण)

(i) स्वभाविक निरीक्षण (Naturalistic observation) — इस विधि द्वारा व्यक्ति के व्यवहारों का निरीक्षण उसके स्वभाविक वातावरण, जहाँ वे रहते हैं खेलते हैं या कोई कार्य करते हैं में ही किया जाता है।

(ii) नियंत्रित निरीक्षण (Controlled observation) — इस विधि में अध्ययनकर्ता कृत्रिम रूप से वातावरण की किसी परिस्थिति को अपने पूर्व नियोजित ढंग से उसकी रचना करता है तथा उस परिस्थिति में व्यक्ति जो प्रतिक्रिया करता है उसका निरीक्षण करता है।

अतः इस प्रकार प्राप्त परिणाम व निष्कर्ष सबसे अधिक विश्वसनीय और प्रमाणिक होता है यह निरीक्षण प्रयोगशाला में ही किया जाता है जिसे प्रयोगात्मक निरीक्षण भी कहा जाता है

लाभ निरीक्षण या स्वभाविक निरीक्षण का गुण (Merits of objective or naturalistic observation)

(1) यह विधि वस्तुनिष्ठ एवं अवैयक्तिक विधि है क्योंकि व्यक्ति जिस तरह का व्यवहार करता है ठीक उसी रूप से निरीक्षक द्वारा उस व्यक्ति का निरीक्षण किया जाता है अतः यह एक वस्तुनिष्ठ विधि है

(2) इस विधि में परिणाम से भी अध्ययन संभव है जिसका सांख्यिकीय निरूपण (Statistical treatment) किया जा सकता है।

(3) लाभ निरीक्षण विधि का विस्तृत रूप में उपयोग किया जा सकता है इसका उपयोग बच्चे, व्यक्ति के अलावे, बालकों, बूढ़ो, लाचारों, भिखारो एवं पशुओं के व्यवहारों का निरीक्षण किया जा सकता है

(4) इस विधि द्वारा एक समय में एक से अधिक व्यक्तियों का अध्ययन किया जा सकता है

लाभ निरीक्षण विधि के दोष (Demerits of the objective observation method) इस विधि के दोष निम्नलिखित है:

(1) इस विधि में निरीक्षक की पूर्वधारणा (Prejudice) का प्रभाव निरीक्षण के निष्कर्षों पर पड़ता है अतः इस विधि द्वारा किसी व्यक्ति के व्यवहारों का अध्ययन विश्वसनीय नहीं होगा।

(2) इस विधि द्वारा व्यक्ति के केवल प्रकट व्यवहारों का ही अध्ययन किया जाता है जैसे व्यक्ति भय और क्रोध दोनों अवस्थाओं में चिल्लाते की क्रिया करता है यहाँ चिल्लाने की क्रिया का निरीक्षण करके यह नहीं कहा जा सकता है कि चिल्लानेवाला भय के कारण चिल्ला रहा है या क्रोध के कारण।

(3) यह निरीक्षण स्वाभाविक परिस्थिति में किया जाता है जिसमें अनेक अज्ञात कारण होते हैं जिनका प्रभाव व्यक्ति के व्यवहार पर पड़ता है।

(4) इस विधि द्वारा व्यक्ति के अनेक प्रकार के व्यवहारों का अध्ययन किया जाता है परन्तु कुछ व्यवहार ऐसे होते हैं जिनका निरीक्षण वस्तुनिष्ठ ढंग से नहीं किया जा सकता है।

(5) कभी-कभी निरीक्षक को निरीक्षण करने में कठिनाई होता है क्योंकि निरीक्षक बाहरी व्यक्ति होता है अतः उसकी उपस्थिति में व्यक्ति अपनी स्वाभाविक प्रतिक्रिया प्रकट करने में संकोच करता है अतः वह व्यक्ति अपने स्वाभाविक व्यवहार को अस्वाभाविक रूप में बदल देता है।

By
Date 7/5/2020

Kumar Patel
Assistant professor, Department of Psychology, Maharaja College, Ara